B.A - III
- VII

शोध - अभिकल्प
RESEARCH DESIGN

पूर्व परीक्षण - पश्चात परीक्षण अभिकल्प (Before-After Design or pretest - post test Design) :-

मनोवैज्ञानिक शोधों या प्रयोगों में पूर्व परीक्षण - पश्चात परीक्षण अभिकल्प का व्यवहार कई तरह से किया जाता है इसके निम्नांकित प्रकार या रूप अधिक महत्वपूर्ण है -

(1.) एक समूह पूर्वपरीक्षण - पश्चात परीक्षण अभिकल्प (One-group Before After Design) :—
इस अभिकल्प में प्रयोज्यों के एक समूह का परीक्षण दो अवस्थाओं में किया जाता है। पहली अवस्था स्वतंत्र चर (प्रयोगात्मक चर) के घटित होने के पहले होती है, जिसमें किसी विशेष मापदण्ड के आधार पर प्रयोज्यों का परीक्षण किया जाता है। दूसरी वह अवस्था है जिसमें प्रयोगात्मक चर के घटित होने के पश्चात प्रयोज्यों का पुनः परीक्षण किया जाता है। पहली नियंत्रण अवस्था में होती है और दूसरी प्रयोगात्मक अवस्था में होती है। इन दोनों अवस्थाओं के परिणामों में जो अंतर होता है वह प्रयोगात्मक चर का प्रभाव होता है।

लेकिन इस प्रकार के अभिकल्प में कई त्रुटियाँ होने के कारण प्राप्त परिणाम संदिग्ध बन जाता है :—

(क) इस अभिकल्प में सुग्राहिता (Sensitization) तथा कृत्रिमता (Sophistication) का दोष पाया

जाना है। सुग्राहिता का अर्थ यह है कि पूर्व-परीक्षण (Pre-test) के समय प्रयोज्य में उतनी सुग्राहिता या संवेदनशीलता नहीं रहती है, जितना की पश्चात-परीक्षण (Post-test) के समय होती है। जैसे — मनोवृत्ति-परिवर्तन के अध्ययन में प्रयोज्य पूर्व-परीक्षण के समय मनोवृत्ति-वस्तु (Attitude object) के प्रति संवेदनशील या सुग्राही नहीं होता है। लेकिन पश्चात-परीक्षण में मनोवृत्ति में जो परिवर्तन होता है, वह मध्यवर्ती-चर यानी परिचालित चर का प्रभाव न होकर संवेदनशीलता या सुग्राहिता की बढ़ती हुई मात्रा का हो सकता है। इस कारण भी प्राप्त परिणाम संदिग्ध बन जाता है।

(ख) पूर्व-परीक्षण तथा पश्चात-परीक्षण के बीच समय-अंतराल के कारण प्रयोज्य की परिपक्वता में परिवर्तन हो सकता है, जिसका प्रभाव पश्चात-परीक्षण में असम्बद्ध-चर (Extraneous Variable) के रूप में आश्रित-चर पर पड़ सकता है। जैसे — मनोवृत्ति-परिवर्तन के अध्ययन में पूर्व-परीक्षण तथा पश्चात-परीक्षण के बीच समय-अंतराल में परिपक्वता में होने वाले परिवर्तन का प्रभाव पश्चात-परीक्षण में मनोवृत्ति-परिवर्तन पर पड़ सकता है।

(ग) उपकरण ह्रास (Instrument decay) के कारण भी इस अभिकल्प के आधार पर प्राप्त परिणाम गलत हो सकता है। पूर्व-परीक्षण

के समय जिस उपकरण का व्यवहार किया जाता है, पश्चात-परीक्षण के समय उस उपकरण में ह्रास-परिवर्तन उत्पन्न हो सकता है। थकान या नीरसता उत्पन्न होकर आश्रित-चर को प्रभावित कर सकता है। अतः प्राप्त परिणाम-चर का प्रभाव है या उपकरण ह्रास का, यह निश्चित करना कठिन बन जाता है।

(ब) रोजेनब्लैट एवं मिलर (Rosenblatt & Miller, 1972) के अनुसार इस अभिकल्प में प्रतिगमन-प्रभाव (regression effect) का भी दोष पाया जाता है। पूर्वपरीक्षण तथा पश्चात-परीक्षण के परिणामों में जो अंतर है वह परिचालित-चर का प्रभाव है या प्रतिगमन प्रभाव का, यह कहना संदिग्ध बन जाता है।

(स) इस अभिकल्प का एक दोष यह भी है कि पूर्व-परीक्षण के समय जो प्रयोज्य उपलब्ध होते हैं, वे पश्चात-परीक्षण के समय उपलब्ध हों भी तो उनकी रुचि बदल जाती है। अतः पश्चात-परीक्षण में प्राप्त परिणाम पर स्वतंत्र-चर के साथ-साथ इन सभी असम्बद्ध चरों का प्रभाव भी पड़ सकता है।

// Next day.